

पाकी और नमाज़



تعاوني الزلفي

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

هاتف: ٤٢٣٤٤٦٦ ٠١٦. فاكس: ٤٢٣٤٤٧٧ ٠١٦

226

الطهارة والصلاة - اللغة الهندية

पाकी और नमाज़



المكتب الأنطوني للدعوة والارشاد
ونوعية الجاليات بالزلفي

الطهارة والصلاة - اللغة الهندية

إعداد وترجمة: المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

الطبعة الأولى: ١٤٣٩ / ٦

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي ، ١٤٣٩ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي
الطهارة والصلاة - الهندية. / المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات بالزلفي . - الزلفي ، ١٤٣٩ هـ

٤٤ ص؛...سم

ردمك: ١-٩٩-٨٠١٣-٦٠٣-٩٧٨

١- الطهارة (فقه إسلامي) ٢- الصلاة أ.العنوان

١٤٣٩ / ٥٥٤٤

ديوي ٢٥٢

رقم الإيداع: ١٤٣٩ / ٥٥٤٤

ردمك: ١-٩٩-٨٠١٣-٦٠٣-٩٧٨

तहारत (पाकी) के आदेश

नापाकी का बयान

हिस्सी नजासत (गन्दगी) इस नजासत को साफ़ करना और शरीर के जिस अंग में लग जाए, उसका धुलना ज़रूरी है। यदि कपड़े या शरीर में गन्दगी लग जाए तो उसे साफ़ करने के लिए धोना ज़रूरी है। यदि वह ऐसी गन्दगी हो जो दिखायी देती हो, जैसे हैज़ (मासिक स्राव) का खून तो यदि धोने के बाद भी निशान बाकी रह जाता है और खत्म नहीं हो पाता तो उसमें कोई हर्ज नहीं है।

लेकिन यदि गन्दगी ऐसी हो जो दिखायी न देती हो तो उसे एक बार धोना ही काफी है।

ज़मीन में अगर गन्दगी लग गयी है तो उसपर पानी बहा देने से वह पाक हो जाएगी। इसी तरह से यदि गन्दगी तरल पदार्थ हो, तो सूख जाने से ही पाक हो जाती है। लेकिन यदि गन्दगी ठोस हो तो उसको हटाने से ही वह पाक होगी।

पानी का इस्तेमाल पाकी हासिल करने और नजासत को दूर करने के लिए किया जाता है। मिसाल के तौर पर वर्षा का पानी और समुद्र आदि का पानी। उसी तरह इस्तेमाल किया हुआ पानी भी इस्तेमाल किया जा सकता है। शर्त यह है कि पानी का रंग, गंध आदि न बदला हो।

उसी तरह से उस पानी का भी प्रयोग किया जा सकता है जिसमें कोई पाक चीज़ मिलायी गयी हो या मिल गयी हो। शर्त यह है कि वह पानी ही समझा जाए। अगर पानी में कोई पाक चीज़ मिलायी गयी हो और उसका नाम बदल गया हो, तो पाक होने के लिए उसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

उसी तरह से उस पानी का इस्तेमाल भी ठीक नहीं है जिसमें निजासत और गन्दगी मिल गयी हो और उससे पानी का स्वाद, सुगंध या रंग बदल गया हो। लेकिन अगर इन चीज़ों में से कोई चीज़ नहीं बदली है तो सहीतरीन कौल के मुताबिक़ उस पानी का इस्तेमाल जाएज़ है।

पानी पीने के बाद जो पानी बच जाता है उसका इस्तेमाल जायज़ है। अलबत्ता कुत्ता या सुव्वर का जूठा पानी इस्तेमाल करना जायज़ नहीं है। क्योंकि वह नापाक हैं।

नजासत की किस्में

शरीर से निकलने वाली कुछ निजासतें निम्नलिखित हैं

1. पेशाब और पाखाना
2. वदी . यह एक सफ़ेद, गाढ़ा और गदला किस्म का पानी है, जो पेशाब के बाद निकलता है।
3. मज़ी . यह सफ़ेद, चिपचिपा पतला पानी है जो कम इच्छाओं के समय निकलता है।
4. मणी . यह पाक है, लेकिन यह तरल अवस्था में है तो उसका धुलना और सूख गया हो तो खुरचना मुस्तहब है।

5. जानवरों का पेशाब और गोबर, अलबत्ता माकूलुल लहम (जिनका गोश्त खाया जाता है) जानवरों का पेशाब और गोबर पाक है।

6. हैज़ और नफ़ास

उपरोक्त सभी नजासतों को धोना और शरीर और कपड़ों में लगी हुई नजासत को दूर करना ज़रूरी है।

यदि कपड़े में मज़ी लग जाए तो केवल छींट मारना ही काफी है।

नजासत के तअल्लुक से कुछ अहकामात

1. यदि इंसान को कुछ ऐसा लग जाए जिसके बारे में उसे न मालूम हो कि यह पाक है या नापाक? तो बेहतर है उसे धोले,

2. अगर इंसान नमाज़ पढ़कर फ़ारिग़ होता है और अपने बदन पर गन्दगी देखता है, जिसे वह नहीं जानता था या जानता तो था मगर भूल गया था तो वाज़ेहतरीन कौल के मुताबिक उसकी नमाज़ सही होगी।

3. जिस व्यक्ति के कपड़ा आदि में नजासत की जगह छुपी रह जाए तो उसपर ज़रूरी है कि वह ढूँढ़े और उस जगह को धोये जिसके बारे में उसका गुमान है कि यहीं नजासत रही होगी। उसका कारण यह है कि नजासत का इसी से पता है कि कोई ठोस चीज़ लगी हो, या उसका रंग बदल गया हो, गंध आ गयी हो। लेकिन यदि ऐसा

पता नहीं चलता कि किस जगह नजासत लगी है तो पूरा कपड़ा धोना होगा।

शौच की आवश्यकता

शौच जाते समय इन बातों का ख्याल रखना चाहिए।

1. शौचालय में प्रवेश करते समय पहले बायां पैर अन्दर रखें और ये दुआ पढ़ें: **बिस्मील्लाह अल्लाहुम्म इन्नी अउजुबिक मिनलखुब्सी वलखबाइस**, यानी, “ऐ मेरे अल्लाह! मैं ख़बीस जिन्नातों और ख़बीस चूड़ैलों से तेरी पनाह मांगता हूँ

और शौचालय से निकलते समय “**गुफ़रानक**” कहते हुये पहले दायां पैर बाहर निकालें।

2. अपने साथ कोई ऐसी चीज़ न ले जाएं जिसमें अल्लाह के नाम का उल्लेख हो। केवल उस स्थिति में ले जा सकते हैं यदि उसके खो जाने का भय हो।

3. खुले में शौच करते समय इस बात का ख्याल रखें कि क़िब्ले का रुख़ न हो और उसकी ओर पीठ करके भी न बैठें। अलबत्ता पाखाना में क़िब्ला की ओर पीठ करके बैठने की इजाज़त है,

4. लोगों से शर्मगाह को ढकना और उसमें कोताही न बरतना। मर्द के लिए छुपाने की जगह घुटना से लेकर ढोरी (नाफ़) तक है जबकि औरत सरापा छुपाने का सामान है

5. शरीर में पेशाब या पाखाना लगने से बचना चाहिए।

6. शौच के बाद पानी, या पत्थर आदि से सफ़ाई कर लेनी चाहिए। सफ़ाई के लिए बायें हाथ का इस्तेमाल करना चाहिए

वुजू का बयान

वुजू के बिना नमाज़ कुबूल नहीं होती है। अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

لَا يَقْبَلُ اللَّهُ صَلَاةَ أَحَدِكُمْ إِذَا أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ

‘जब तुम में से कोई बेवुजू हो जाता है तो अल्लाह तआला उस की नमाज़ उस वक्त तक कुबूल नहीं करता जब तक दोबारा वुजू न कर ले (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 6954 मुस्लिम 225)

वुजू की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है। इंसान को चाहिए कि उन्हें समझे। उन्हीं फ़ज़ीलतों में से एक फ़ज़ीलत इस हदीस में आयी है जिसे उस्मान बिन अफ़फ़ान रजियल्लाहु अन्हु ने उल्लेख किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ تَوَضَّأَ فَأَخْسَنَ الْوُضُوءَ خَرَجَتْ حَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ، حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِهِ

“जो व्यक्ति अच्छी तरह वुजू करता है तो उसके गुनाह उसके शरीर से निकल जाते हैं, यहां तक कि उसके नाखून के नीचे से भी निकल जाते हैं (सही मुस्लिम 245)

उस्मान रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ أَتَمَّ الوُضوءَ كَمَا أَمَرَهُ اللهُ تَعَالَى، فَالصَّلَاةُ المَكْتُوبَاتُ كَفَّارَاتٌ لِمَا بَيْنَهُنَّ

“अल्लाह ने जिस तरह से आदेश दिया है यदि कोई उस तरह से वुजू करता है तो फ़र्ज़ नमाज़ें अपने बीच के गुनाहों का कफ़ारा होंगी, (सही मुस्लिम 231)

वुजू का तरीका

1. इंसान अपने दिल से वुजू की नीयत करे। नीयत के शब्द ज़बान से अदा न करे। नीयत दिल के इरादे को कहते हैं। उसके बाद **बिस्मिल्लाह** कहे।
2. फिर तीन बार अपनी हथेलियों को धोए।
3. उसके बाद कुल्ली करे और तीन बार नाक में पानी चढ़ाए।
4. फिर चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक और लम्बाई में बाल उगने की जगह से ठूरी के नीचे तक धुले।
5. उसके बाद तीन बार अपने हाथों की उंगलियों के सिरे से कोहनी समेत धोये पहले दाया हाथ और फिर बायां हाथ धोये,
6. फिर एक बार अपने सिर का मसह करे। इंसान अपना हाथ भिगोए और अपने हाथ को सिर के शुरु हिस्से से अखीर तक ले जाए और फिर शुरु सिर पर वापस लाए।
7. फिर अपने दोनों कानों का एक बार मसह करे। अपनी उंगुली को कान के अन्दर डाले और अंगूठे से कान के ऊपरी हिस्से का मसह करे।

8. उसके बाद तीन बार अपने पांव को उंगुलियों के सिरे से टखनों समेत धोये। पहले दायां पांव धोये फिर बायां पांव धोये।

9. उसके बाद यह दुआ पढ़नी मुस्तहब है। "अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू वरसूलुह,

उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيَبْلُغُ - أَوْ فَيَسْبِغُ - الوُضُوءَ ثُمَّ يَقُولُ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ إِلَّا فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةِ يَدْخُلُ مِنْ أَيِّهَا شَاءَ

"जो कोई इंसान अच्छी तरह वुजू करता है और फिर यह दुआ पढ़ता है, "अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, व अन्न मुहम्मदन अबदुहू वरसूलुहू तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाजे खोल दिये जाते हैं। जिस दरवाजे से चाहेगा वह दाखिल होगा (सही मुस्लिम 234)

मोज़े पर मसह

इस्लाम के आसान दीन होने की एक दलील यह है कि उसने मोज़े पर मसह करने को जायज़ करार दिया है। और यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है।

अम्र बिन उमैय्या रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمَسُّحُ عَلَى عِمَامَتِهِ وَخُفَيْهِ

“मैंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पगड़ियों और मोज़ों पर मसह करते देखा, (सही बुख़ारी 205) मुगीरा बिन शोअबा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते है कि

بَيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ إِذْ نَزَلَ فَقَضَى حَاجَتَهُ، ثُمَّ
جَاءَ فَصَبَّيْتُ عَلَيْهِ مِنْ إِدَاوَةٍ كَانَتْ مَعِي، فَتَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ

एक रात मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था कि आप उतरे और शौच के लिए गये। फिर आप आए तो मैं ने अपने साथ मौजूद बालटी से पानी उंडेला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुजू किया और अपने दोनों मोज़ों पर मसह किया, (मुत्तफ़क़ अलैह, बुख़ारी 203, मुस्लिम 274)

अलबत्ता मोज़ों पर मसह के लिए शर्त यह है कि इंसान ने पाकी यानी वुजू की हालत में मोज़े पहने हों। मसह की कैफ़ियत यह होगी कि भीगे हुए हाथों को ज़ाहिरी तौर पर फेरा जाए। मोज़ों के भीतरी हिस्सों पर मसह नहीं किया जायेगा

मसह की अवधि मुकीम के लिए एक दिन और एक रात है। और मुसाफ़िर (यात्री) किसी ऐसी यात्रा पर हो कि उसके लिए नमाज़ कसर करना जायज़ हो तो उसके लिए मसह की अवधि तीन दिन और तीन रात है। मसह की अवधि समाप्त हो जाने या मसह के बाद मोज़ा उतार लेने, या नापाक होने की स्थिति में मसह बातिल हो जायेगा। क्योंकि उस वक्त नहाना ज़रूरी हो जाता है।

वुजू को तोड़ने वाली चीजें

1. शरीर से किसी प्रकार का विकार बाहर आने की स्थिति में वुजू टूट जाता है। जैसे पेशाब, पाखाना, हवा, मणि, मजी, वदी अथवा खून आदि।
2. नींद यानी सो जाना
3. ऊंट का गोश्त खाना
4. बेहोश हो जाना या होश खो देना

स्नान या नहाना

पाकी की नीयत से पूरे शरीर पर पानी डालने को स्नान कहते हैं। उसके सही होने के लिए ज़रूरी है कि पूरे शरीर को धोया जाए। साथ ही कुल्ली की जाए और नाक में पानी चढ़ाया जाए। पांच कारणों से नहाना अनिवार्य हो जाता है।

1. जागी हुई हालत में या नींद की हालत में या संभोग करते समय तीव्रता के साथ मणि का ख़ारिज होना। यदि मणि बिना संभोग के, किसी बीमारी के कारण या अधिक टंडक के कारण निकल जाए तो ऐसी हालत में स्नान वाजिब यानी अनिवार्य नहीं होगा। यदि कोई व्यक्ति अपनी मणि या उसका निशान देखले तो उसपर स्नान वाजिब होगा, चाहे उसे याद हो या न हो।
2. स्त्री और पुरुष के जनांगों का मिलन यानी यदि पुरुष का लिंग स्त्री के शर्मगाह में दाखिल हो जाए तो फाल हो या न हो स्नान ज़रूरी हो जाएगा।

3. स्त्रियों की माहवारी के समाप्त होने पर।
4. मृत्यू के बाद मय्यत को स्नान कराना ज़रूरी है।
5. काफ़िर जब इस्लाम में दाखिल होगा तो उसपर स्नान वाजिब हो जायेगा।

नापाक होने के बाद कौन कौन सी चीज़ें हराम हैं

स्त्री और पुरुष जब संभोग की क्रिया से गुज़रें, चाहे मणि बाहर निकले या न निकले, तो उसमें से हर एक को जुन्बी कहेंगे। और उन पर निम्नलिखित चीज़ें हराम हैं

1. नमाज़ पढ़ना।
2. तवाफ़ करना।
3. कुरआन पाक की तिलावत करना, या उसे छूना।
4. मस्जिद में ठहरना। मस्जिद से गुज़रने में कोई हर्ज नहीं है। अलबत्ता ज़रूरी हो तो मस्जिद में ठहरना भी जायज़ है। और वुजू के द्वारा नापाकी को हलका किया जा सकता है।

तयम्मुम

सफ़र में या हज़र में दानों जगहों पर तयम्मुम जायज़ है। शर्त यह है कि निम्नलिखित वजह हो, तो वुजू और स्नान दोनों के लिए तयम्मुम जायज़ है।

1. जब पानी न मिले, या पानी मिले मगर इतना कम हो कि वह पाकी हासिल करने के लिए काफ़ी न हो। अलबत्ता पहले पानी तलाश करे। उसके बाद भी पानी न मिले तो

वह तयम्मुम करेगा या पानी तो उसके पास हो, या पानी के पास पहुंच सकता हो मगर उसे भय हो कि उसकी जान य माल को उससे नुक़सान पहुंच सकता है।

2. यदि शरीर के कुछ हिस्सों में घाव हो और पानी लग जाने से नुक़सान की आषंका हो तो उस पर एक बार मसह कर ले। अपने हाथ को भिगा ले और उस हिस्से पर फेर ले। यदि मसह से भी नुक़सान की आषंका हो तो अन्य अंगो को धो ले मगर उस अंग का तयम्मुम करेगा।

3. यदि पानी या मौसम बहुत ठंडा हो और पानी के इस्तेमाल से बीमारी का भय हो।

4. उसके पास पानी मौजूद हो, लेकिन उसे पीने या खाना बनाने की ज़रूरत हो तो ऐसी सूरत में तयम्मुम करेगा।

तयम्मुम का तरीका

तयम्मुम का तरीका यह है कि इंसान अपने दिल से नीयत करे और अपने दोनों हथेलियों से एक बार ज़मीन पर मारे। उसके बाद अपने चेहरे पर मसह करे और फिर अपने बायें हाथ की हथेली के अन्दरूनी हिस्से को दाहिने हाथ के ऊपरी हिस्से पर फेरे। और फिर दाहिनी हथेली के अन्दरूनी हिस्से को बायें हाथ के ऊपरी हिस्से पर फेरे।

तयम्मुम भी उन चीज़ों से टूट जाता है जिन से वजू टूट जाता है। उसी तरह जिसके पास पानी न रहा हो, उसे नमाज़ से पहले पानी मिल जाए, या नमाज़ के बीच पानी उपलब्ध हो जाए तो तयम्मुम टूट जायेगा।

यदि नमाज़ पढ़ लेने के बाद पानी मिले तो उसकी नमाज़ सही हो जायेगी और उसका दोहराना ज़रूरी नहीं होगा।

माहवारी और नफ़ास

प्रत्येक स्वस्थ नारी को प्रत्येक माह कुछ निश्चित दिनों के लिए रक्तस्राव होता है जिसे माहवारी कहते हैं। उसी तरह बच्चे को जन्म देने के बाद कुछ दिनों तक रक्तस्राव जारी रहता है उसे नफ़ास कहते हैं।

ऐसी महिलाओं के लिए जो माहवारी के दिनों में या नफ़ास की हालत में हों नमाज़ पढ़ना या रोज़ा रखना जायज़ नहीं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

إِذَا أَقْبَلَتِ الْحَيْضَةَ، فَدَعِي الصَّلَاةَ، وَإِذَا أَدْبَرَتْ، فَاعْسِلِي عَنكَ الدَّمَ وَصَلِّي

“जब माहवारी शुरू हो जाए तो नमाज़ पढ़ना छोड़ दे और जब माहवारी आना बन्द हो जाए तो अपना खून धो ले और नमाज़ पढ़े (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 331, मुस्लिम 333)

इस अवधि में जो नमाज़ें छूट जायेंगी उनका कज़ा करना ज़रूरी नहीं है। अलबत्ता जितने रोज़े छूटे हों, उनकी कज़ा करनी होगी। उसी तरह माहवारी की हालत में खानए काबा का तवाफ़ करना भी जायज़ नहीं है। और माहवारी के दिनों में पति पर हराम है कि वह अपनी पत्नी के साथ संभोग करे।

रक्तस्राव बन्द होते ही औरत पाक हो जायेगी। इस अवसर पर उसके लिए नहाना अनिवार्य है। और अब उसके लिए जो चीज़ें हराम थीं, व हलाल हो जायेंगी।

यदि नमाज़ का समय हो गया और फिर उसकी माहवारी शुरु हुई तो सही कौल के अनुसार वह पाकी के बाद उस नमाज़ की कज़ा करेगी।

उसी तरह यदि औरत नमाज़ निकलने से (एक रकाअत पढ़ने में जितना समय लगता है), से पहले भी पाक हो जायेगी तो उसको नमाज़ पढ़नी होगी। और मुस्तहब है कि जो नमाज़ जिसके साथ जमा की जाती है, उसकी भी कज़ा करे।

मिसाल के तौर पर यदि सूरज डूबने से पहले पाक होती है तो उसे अम्र की नमाज़ भी पढ़नी होगी और जोहर की नमाज़ की कज़ा मुस्तहब होगी। इसी तरह अगर आधी रात से पहले पाक होगी तो वह इशा की नमाज़ पढ़ेगी और उसके हक में मुस्तहब है कि वह मगरिब की नमाज़ कज़ा करे।

नमाज़ के अहकाम

नमाज़ इस्लाम का दूसरा रुक्न है। यह हर व्यस्क (बालिग) और समझदार मुसलमान पर वाजिब है। आदमी पन्द्रह साल की आयु को पहुंचने पर व्यस्क (बालिग) हो जाता है। उसके नाफ़ के नीचे बाल उग आते हैं। और मणि खारिज होने लगती है। महिलाओं के लिए एक शर्त यह भी है कि उसकी माहवारी स्राव शुरु हो जाता है। यदि

किसी को इन तीनों में से कोई एक चीज़ भी हासिल हो गयी तो वह व्यस्क हो गया।

नमाज़ की अनिवार्यता को नकारने वाला व्यक्ति इजमा की नज़र में काफिर होगा। सुस्ती और काहिली से नमाज़ छोड़ने वाले इंसान के काफिर होने के बारे में सहाबियों का इजमा है।

क़ियामत के दिन नमाज़ का ही सबसे पहले हिसाब लिया जायेगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا [النساء: १०३]

“नमाज़ मोमिनों पर वाजिब की गयी है तय वक्त पर (सूरह निसा, आयत 103)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالْحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ "

“इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है। ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुरसूलुल्लाह की गवाही देना, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, हज करना, और रमज़ान के राज़े रखना। (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 8, मुस्लिम 16)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना: إِنَّ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشُّرْكِ وَالْكَفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ

“मुसलमान और कुफ़ व शिर्क के बीच की सीमा (रेखा) नमाज़ है। (सही मुस्लिम 82)

नमाज़ अदा करने के बेशुमार फ़ज़ाएल हैं। उन्हीं में एक फ़जीलत यह है जिसे अबु हु़रैरा रजियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

مَنْ تَطَهَّرَ فِي بَيْتِهِ، ثُمَّ مَشَى إِلَى بَيْتٍ مِّنْ بُيُوتِ اللَّهِ لِيَقْضِيَ فَرِيضَةً مِنْ فَرَائِضِ اللَّهِ، كَانَتْ خَطْوَاتُهُ إِحْدَاهُمَا مَحْطٌ خَطِيئَةٍ، وَالْأُخْرَى تَرْفَعُ دَرَجَةً،

‘जिसने अपने घर में वुजू किया और किसी मस्जिद की तरफ़ गया ताकि अल्लाह के फ़र्जों में से एक फ़र्ज नमाज़ को अदा करे तो उसके एक क़दम की वजह से गुनाह ख़त्म होंगे और दूसरे की वजह से उसका दर्जा बुलन्द होगा, (सही मुस्लिम 666)

अबू हु़रैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَا يَمْحُو اللَّهُ بِهِ الْخَطَايَا، وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ؟ قَالُوا بَلَىٰ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «إِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ، وَكَثْرَةُ الْحُطَا إِلَى الْمَسَاجِدِ، وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَذَلِكُمْ الرِّبَاطُ»

“क्या मैं तुम लोगों को ऐसी चीज़ न बता दूँ जिसकी वजह से अल्लाह तआला गुनाहों को मिटा देगा और दरजात को बुलन्द फ़रमा देगा सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम ने कहा कि अल्लाह के रसूल! ज़रूर बताइये! आपने फ़रमाया “नापसंदीदगी के बावजूद पूरी तरह वुजू करना, मस्जिदों

की तरफ़ ज़्यादा जाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना, यह सीमा पर रखवाली करने के समान है, (सही मुस्लिम 666)

अबू हुसैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

مَنْ عَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ، أَوْ رَاحَ، أَعَدَّ اللَّهُ لَهُ فِي الْجَنَّةِ تَرْتِلاً، كُلَّمَا عَدَا، أَوْ رَاحَ

“जो सुबह और शाम मस्जिद जाता है तो जितनी बार सुबह व शाम को वह जाता है, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में मेहमाननवाज़ी तैयार करता है (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 662, मुस्लिम 669)

नमाज़ से संबंधित अहम अहकाम

1. मर्दों के लिए मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है। हदीस में आया है 'आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَمُرَّ بِالصَّلَاةِ فَتَقَامَ، ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى مَنَازِلِ قَوْمٍ لَا يَشْهَدُونَ الصَّلَاةَ، فَأَحْرَقَ عَلَيْهِمُ

मैंने इरादा किया है कि मैं आदेश दूँ कि नमाज़ कायम की जाए और मैं उन लोगों के घरों की तरफ जाऊँ जो हमारे साथ नमाज़ में शरीक नहीं होते और उन्हें आग लगा दूँ (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 2420, मुस्लिम 651)

2. मुसलमान को चाहिए कि वह मस्जिद में पूरे सम्मान और इत्मिनान के साथ तशरीफ़ लाए।

3. मस्जिद में दाखिल होने वाले व्यक्ति के लिए सुन्नत है कि वह पहले दायां पांव अन्दर करे और यह दुआ पढ़े "अल्लाहुम्मफतह—ली अबवाब रहमतिक, यानी, 'ऐ मेरे अल्लाह! तू मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़ों को खोल दे (सही मुस्लिम 1252)

1. सुन्नत है कि इंसान मस्जिद में बैठने से पहले दो रकअत तहैयतुल मस्जिद अदा करे। हजरत अबु क़तादा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمْ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رُكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ

"जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो उसे चाहिए कि बैठने से पहले दो रकआत अदा करे (मुत्तफ़क अलैह बुख़ारी 444, मुस्लिम 714)

5. नमाज़ में शर्मगाह का ढकना ज़रूरी है। मर्द की शर्मगाह नाफ़ से घुटना के बीच का हिस्सा है जबकि औरत सरापा छुपाने का सामान है। नमाज़ में चेहरे के सिवा

6. किब्ला का रुख़ करना ज़रूरी है और यह दो हालतों के सिवा नमाज़ के कुबूल होने की शर्त है। पहली हालत यह है कि कोई रुकावट हो जैसे बीमारी आदि। और दूसरी यह कि इंसान सफ़र कर रहा हो। यह हालत नफ़िल नमाज़ों के साथ खास है। इसमें फ़र्ज़ नमाज़ शामिल नहीं है।

7. नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करना ज़रूरी है। वक़्त से पहले नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी और वक़्त को टालना हराम है।

8. नमाज़ के लिए जल्दी जाना चाहिए और पहली पंक्ति में जगह पाने की कोशिश करनी चाहिए और नमाज़ का इन्तिज़ार करना चाहिए। क्योंकि इसमें बड़ी फ़ज़ीलत है। अबू हु़रैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النَّدَاءِ وَالصَّفِّ الْأَوَّلِ، ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلَّا أَنْ يَسْتَهْمُوا عَلَيْهِ
لَأَسْتَهْمُوا، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهَجِيرِ لَأَسْتَبْقُوا إِلَيْهِ

“यदि लोगों को मालूम हो जाए कि अज़ान और पहली पंक्ति में कितनी फ़ज़ीलत है तो उन्हें कुरआअन्दाज़ी के बिना उनमें अवसर न मिल सके तो लोगकुरआअन्दाज़ी भी करेंगे और लोगों को नमाज़ों के लिए जल्दी आने की फ़ज़ीलत मालूम हो जाए तो उसके लिए सबक़त करें (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 615, मुस्लिम—437)

अबू हु़रैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لَا يَزَالُ أَحَدُكُمْ فِي صَلَاةٍ مَا دَامَتِ الصَّلَاةُ تَحْسِبُهُ

“इंसान उस वक़्त तक नमाज़ में होता है जब तक कि नमाज़ उसे रोके रखती है। (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 659, मुस्लिम 649)

नमाज़ का समय

1. जुहर का समय सूरज ढलने से लेकर साया की लम्बाई उस चीज़ के बराबर होने तक होता है।
2. अस्त्र का समय साया की लम्बाई उस चीज़ के बराबर होने से लेकर सूरज डूबने (सुर्यास्त) तक रहता है।
3. मग़रिब की नमाज़ का समय सूरज डूबने से लेकर पश्चिम की लाली समाप्त होने तक होता है।
4. इशा की नमाज़ का समय पश्चिम की लाली समाप्त होने से लेकर आधी रात तक होता है।
5. फ़ज़्र की नमाज़ का समय तुलूए फ़ज़्र से लेकर सूरज उगने तक रहता है।

ऐसी जगहें जहां नमाज़ सही नहीं होतीं

कब्रिस्तान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: **الأَرْضُ كُلُّهَا مَسْجِدٌ إِلَّا الْحِمَامَ وَالْمَقْبَرَةَ**

“पूरी ज़मीन मस्जिद (सज्दा करने की जगह) है, सिवाए हम्माम और क़ब्रिस्तान के। इसे इमाम बुखारी, मुस्लिम, अबु दाऊद, तिर्मिज़ी और इमाम नसायी ने रिवायत किया है अलबत्ता क़ब्रिस्तान में जनाज़े की नमाज़ जायज़ है।

2. क़ब्र की ओर रुख़ करके नमाज़ पढ़ना अबू मर्सद गनवी रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना

لَا تُصَلُّوا إِلَى الْقُبُورِ، وَلَا تَجْلِسُوا عَلَيْهَا

“कब्रों का रुख करके नमाज़ न पढ़ो और न ही उन पर बैठा करो, (सही मुस्लिम 973)

3. ऊंट का बाड़ा, वह जगहें जहां ऊंट रहते हैं। इसी तरह नापाक जगहों में नमाज़ नहीं होती है।

नमाज़ की कैफियत

तमाम इबादतों की तरह नमाज़ के वक्त भी नीयत का होना ज़रूरी है। नीयत दिल से, ज़बान से अदा किये बिना करनी चाहिए। नमाज़ की कैफियत निम्नलिखित है:

1. नमाजी पूरी तरह किब्ला की ओर खड़ा हो, टेढ़ा तिरछा होकर खड़ा होना ग़लत है।

2. फिर तकबीर यानी **अल्लाहु अकबर** कहे और तकबीर के समय अपने दोनों हाथों को दोनों मोड़ों या दोनों कानों तक उठाए।

3. फिर अपनी दाहिनी हथेली को बायीं हथेली पर रखकर सीने पर रखे।

3. फिर सना पढ़े: **الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ** अलहम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तय्यबन मुबारकन फीहि (सही मुस्लिम 600)

या यह पढ़े: **سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ**

सुबहानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व ला इलाह गैरुक, (सुनन अबू दाऊद 775, सुनन तिर्मिजी 242) इसे शैख अलबानी ने सही करार दिया है।

या इसके सिवा कोई दूसरी दुआ-ए-इस्तफ़ताह पढ़े। बेहतर तो यह है कि यह दुआ बदलबदल कर पढ़े। एक ही दुआ को न पढ़े। क्योंकि इस से खुशू व खूजू की कैफ़ियत पैदा होगी।

5. उसके बाद तरऊज़ यानी **أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ** अऊजू बिल्लाहि मिनशैतानिर्रजीम, पढ़े।

इसके बाद **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** बिस्मिल्लाहि रंहमानिर्रहीम पढ़े और फिर सूरह फ़ातिहा की तिलावत करे,

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ * الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ * مَا لِكَ يَوْمَ الدِّينِ * إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ
نَسْتَعِينُ * اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ * صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

2. अलहमदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अर्रहमानिर्रहीम, मालिकियौमिद्दीन, इय्याक नाबुदु वइय्याक नसतईन, इहदिनस्सिरातल मुस्तकीम, सिरातल्लजीन अनअमतअलैहिम, गैरिलमगजूबिअलैहिम वलज्ज़ाल्लीन,, आमीन,,

7. उसके बाद जितना हो सके, कुरआन की तिलावत करे

8. फिर रुकूअ करे और रुकूअ के समय अपने हाथों को कंधों तक उठाए और अल्लाहु अकबर कहे। रुकूअ के दौरान अपने हाथों को घुटनों पर रखे। इस दौरान उंगुलियां फैली हुई हों और यह दुआ पढ़नी चाहिए

“सुब्हान रब्बियल अज़ीम ﴿ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ

सुन्नत यह है कि उसको तीन बार पढ़ा जाए उससे ज़्यादा बार भी पढ़ना जायज़ है और यदि एक बार भी पढ़ते हैं तो भी काफ़ी होगा।

9. फिर इमाम और मुन्फरीद में से हर कोई “समीअल्ला हुलिमन हमिदह कहते हुए रुकूअ से अपना सिर उठाए और रुकूअ से उठने के दौरान दोनों हाथों को मोड़ों तक उठाए। मुक्तदी और मुन्फरीद (यानी अकेले नमाज़ पढ़ने वाला) “रब्बना व लकल हम्द कहेंगे, और अपने दायें हाथ की हथेली को बायें हाथ की हथेली पर रखकर सीने पर रख लेंगे।

10. रुकूअ से उठने के बाद कियाम के दौरान ये दुआ पढ़ेंगे।

اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ، مِلْءُ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءُ الْأَرْضِ، وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ

“अल्लाहुम्म रब्बना लकल हम्दु मिल्अस्समावाति व मिल्अल अरजि व मिल्अ मा बैनुहुमा व मिल्अ मा शीइत मिन शैयइन बादु, (सही मुस्लिम 771)

11. फिर पहला सजदा करे और सजदे में जाते समय अल्लाहु अकबर कहे और अपनी सात हड्डियों यानी पेशानी के साथ नाक, दोनों हथेलियों, दोनों घुटनों और दोनों पांवों के किनारों पर सजदा करे। इस बीच अपने बाजू को बगल

से दूर रखे और अपने पांवों की उंगुलियों के सिरों को किब्ला रुख करे और सजदा में यह दुआ पढ़े

“सुब्हान रब्बियल आला, **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى**

इस बारे में सुन्नत है कि उसे तीन बार पढ़ा जाए, तीन बार से ज़्यादा पढ़ना भी जायज़ है। अलबत्ता एक बार पढ़ना काफी होगा और सजदा के दौरान ज़्यादा से ज़्यादा दुआ करना मुस्तहब है, क्योंकि यह उन जगहों में से है जहां दुआ को कुबूल किया जाता है।

12. फिर इंसान अल्लाहु अकबर' कहते हुए सजदा से अपना सिर उठाए और दोनों सजदों के बीच अपने बायां पांव पर बैठे और दाहिने पांव को खड़ा रखे और अपने दाहिने हाथ को दाहिने रान के किनारे यानी घुटने से करीब रखे और बायें हाथ को बायें रान के किनारे यानी घुटने से करीब रखे और उसके हाथों की उंगुलियां फैली हुई हों और उस जलसे में यह दुआ पढ़े।

रब्बिग़ फिरली, रब्बिग़ फिरली, رب اغفربي . رب اغفربي

13. फिर दूसरा सजदा करे और उसमें उन्हीं चीज़ों को अंजाम दे जो उसने पहले सजदा में अंजाम दिया था।

14. फिर दूसरे सजदे से अल्लाहु अकबर कहते हुए सीधा खड़ा हो जाए।

15. दूसरी रकअत में दुआए इस्तिफताह और तरुज के सिवा, दूसरे सभी कथनी और करनी को अंजाम देगा जो

उसने पहली रकअत में किया है, अलबत्ता इस रकअत के दूसरे सजदा के बाद उसी तरह बैठेगा जिस तरह दोनों सजदों के बीच बैठता है लेकिन यहां दाहिने हाथ की उंगुलियों को समेट लेगा और अंगूठे को बिचली उंगली के साथ जोड़ देगा और शहादत की उंगुली से इशारा करेगा और उस जुलूस में तशहहद पढ़ेगा। तशहहद की दुआ यह है

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ
اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ، فَإِنَّكُمْ إِذَا
قَلْتُمُوهَا أَصَابَتْ كُلَّ عَبْدٍ لِلَّهِ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ، أَشْهَدُ أَنْ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

“अत्तहिय्यातु लिल्लाहि, वस्सलवातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यू व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्ला हिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह, (सही बुखारी 831)

इसके सिवा तशहहद के दूसरे वाक्य भी आए हैं।

यदि तीन या चार रकअत वाली नमाज़ पढ़ रहा हो जैसे मगरिब, जोहर, अस्त्र या इशा तो उसके बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए और कियाम के समय अपने हाथ को अपने मोँढ़ों तक उठाते हुए खड़ा होगा और बाकी नमाज़ को दूसरी रकअत की तरह से पूरा करेगा। अलबत्ता कियाम में केवल सूरह फातिहा पढ़ेगा।

तहारत व नमाज़

आखिरी रकअत में दूसरे सजदा के बाद बैठेगा, तशहहुद के बाद दरूद इब्राहीमी पढ़ेगा।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन, व अला आलि मुहम्मदिन, कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक हमीदुम मजीद,

इस दुआ को पढ़ने के बाद जितना चाहे दुआ करे। सुन्नत यह है कि इंसान ज़्यादा से ज़्यादा दुआ करे और यह दुआ भी पढ़े।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَخِيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ أَجَابِيلِ الدَّجَالِ، "अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन अज़ाबिल क़बरि, वमिन अजाबिन्नार व मिन फितनतिल मह्या वल ममाति व मिन फितनतिल मसीहिदज्जाल

16. उसके बाद दायीं ओर "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहते हुए सलाम फेर दे और फिर बायीं ओर भी उसी तरह से करे,

17. जोहर, अस्त्र, मगरिब और इशा की नमाज़ों में नमाज़ी के लिए तवर्क करना मसनून है। उसकी कैफ़ियत यह होगी

कि इंसान अपना दाहिना पांव खड़ा कर दे और बायें पांव को अपनी पिंडली के नीचे से निकाले और अपना सुरीन ज़मीन पर रख दे। और पहले तशहहुद में जिस तरह अपना हाथ रखा था, उसी तरह से रखे।

नमाज़ के बाद की दुआएं

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ، أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ، أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ، وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

“असतग़ फिरुल्लाह, असतग़ फिरुल्लाह, असतग़ फिरुल्लाह, अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम, व मिनकस्सलाम, तबारक्त या जल जलालि वल इकराम, (सही मुस्लिम 591)

“ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु लाशरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन कदीर, अल्लाहुम्म ला मानिअ लिमा आतैत, वला मुतिय लिमा मनअत, वला यनफउ ज़ल जदि मिनकलजद (मुत्तफ़क़ अलैह 844, 593)

“ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन कदीर, ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाहु, वला नाबुदु इल्ला इय्याहू, लहुननेमतु वलहुल फज़लु, वलहुस्सनाउल हसन, ला इलाहा इल्लाहु मुख़लिसीना लहुदीन वलौ करिहल काफ़िरून (सही मुस्लिम 594)

इसके बाद 33बार सुब्हानल्लाह' سُبْحَانَ اللَّهِ, 33बार अल्हम्दु लिल्लाह' الْحَمْدُ لِلَّهِ और 33बार अल्लाहु अकबर' اللَّهُ أَكْبَرُ पढ़े, और 100 पूरा करने के लिए यह दुआ पढ़ें: “ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन कदीर,

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِير

उसी तरह नमाज़ी को हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी, सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास पढ़ना चाहिए। इन तीनों सूरतों को फ़ज़्र और मग़रिब की नमाज़ों के बाद तीन.तीन बार पढ़ना चाहिए।

मसबूक (जिसकी नमाज़ का कुछ हिस्सा छूट गया हो)

जिस की नमाज़ का कुछ हिस्सा छूट गया हो, जैसे एक रकअत या उससे ज़्यादा तो वह इमाम के साथ जितना न पढ़ सका हो, नमाज़ से दूसरा सलाम फेरने के बाद पूरा करेगा और मसबूक ने इमाम के साथ जिन रकअतों को पाया होगा, वह उसकी नमाज़ का शुरुआती हिस्सा समझा

जायेगा। लेकिन यदि किसी से रुकूअ छूट जाए तो पूरी रकअत छूटी हुई समझी जाएगी।

जब वह व्यक्ति जिसकी नमाज़ छूट रही हो मस्जिद में दाखिल होगा, तो नमाज़ी जिस हालत में भी हों, चाहे खड़े हों, रुकूअ में हों, सजदे में हों, या किसी दूसरी हालत में हों, वह उनके साथ उसी अवस्था में जमाअत में शामिल हो जायेगा। वह नमाज़ियों को अगली रकअत के लिए खड़ा होने का इन्तिजार नहीं करेगा। तकबीर तहरीमा खड़ा होकर ही कहेगा, अलबत्ता यदि वह असमर्थ है, जैसे बीमार आदि तो उसके लिए छूट है।

नमाज़ को बातिल कर देने वाली चीज़ें

1. जानबूझ कर बातें करना, चाहे कम ही क्यों न हों।
2. पूरे शरीर का किब्ला रुख से हट जाना।
3. वुजू को तोड़ने वाली किसी चीज़ का घटित हो जाना।
4. अकारण लगातार हरकत करना।
5. हंस देना, हंसी कम ही क्यों न हो।
6. जानबूझ कर नमाज़ में रुकूअ, सजदा, कियाम या कुऊद का इज़ाफ़ा करना।
7. जानबूझ कर इमाम से सबक़त करना।

जो बातें नमाज़ में वाजिब हैं

1. तकबीर तहरीमा के सिवा अन्य तकबीरें,
2. रुकूअ में एक बार "सुबहान रब्बियल अज़ीम पढ़ना।

3. रुकूअ से सिर उठाते समय इमाम का "समीअल्लाहु लिमन हमिदह कहना। अकेले पढ़ रहा हो तो उसे भी कहना होगा।
4. रुकूअ से सिर उठाने के बाद "रब्बना व लकल हम्द, पढ़ना
5. सजदा में एक बार "सुबहान रब्बियल आला पढ़ना
6. दोनों सजदों के बीच रब्बिग़ फिरली कहना।
7. पहला तशहहुद पढ़ना
8. तशहहुद के लिए बैठना।

नमाज़ के अरकान

1. फ़र्ज़ नमाज़ों में ताक़त हो तो खड़ा होना, नफ़ल नमाज़ों में खड़ा होना वाजिब नहीं है, अलबत्ता बैठकर नमाज़ पढ़ने वाले को खड़ा होकर नमाज़ पढ़ने वाले की तुलना में आधा सवाब हासिल होगा,
2. तकबीर तहरीमा
3. हर रकअत में सूरह फ़ातिहा की तिलावत करना,
4. हर रकअत में रुकूअ करना,
5. रुकूअ से उठने के बाद सिधा खड़ा होना,
6. हर रकअत में दो बार सातों हड्डियों पर सजदा करना,
7. दोनों सजदों के बीच बैठना,
8. नमाज़ पढ़ते वक़्त सकून और इत्मिनान का ख्याल रखना,
9. आखिरी तशहहुद,
10. आखिरी तशहहुद के लिए बैठना,
11. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजना,
12. दोनों तरफ सलाम फेरना,
13. नमाज़ के अरकान के बीच तर्तीब का ख्याल रखना।

सहव का बयान

सहव भूलचूक को कहते हैं। यदि नमाज़ी नमाज़ में सहव का शिकार हो जाए या उससे नमाज़ में कमी हो जाए या कमी बेशी को लेकर सन्देह उत्पन्न हो जाए तो उसके लिए सजदए सहव करना होगा।

यदि नमाज़ में किसी चीज़ का इज़ाफ़ा हो जाए जैसे कियाम, रूकूअ या कुऊद आदि तो ऐसी स्थिति में सलाम के बाद सहव के दो सजदे करे।

यदि नमाज़ी से गलती से कोई कमी रह गयी हो, जैसे नमाज़ के किसी रुकन का छूट जाना, या किसी चीज़ का पढ़ने से रह जाना, और बाद वाली रकअत के किरात शुरु करने से पहले वह याद आया हो तो नमाज़ी उसे दोहरा लेगा और छूटा हुआ रुकन और उसके बाद के आमाल को अंजाम देगा। इसके अलावा सजदए—सहो भी करेगा। लेकिन यदि उसके बाद वाली रकअत की किरात शुरु करने के बाद याद आया हो तो जिस रकअत में रुकन छूटा हो, वह बातिल हो जायेगी और उसके बाद वाली रकअत उसकी जगह ले लेगी।

यदि छूटे हुए रुकन का ज्ञान सलाम फेरने के बाद हुआ और समय ज़्यादा नहीं बीता हो तो एक रकअत पूरा करेगा और सजदए सहव करेगा। लेकिन यदि समय ज़्यादा हो गया हो, या वुजू टूट गया हो तो नमाज़ को नये सिरे से पढ़ेगा,

यदि किसी वाजिब चीज को भूल गया हो जैसे तशहहुद के लिए बैठना, या उसी की तरह नमाज़ की कोई दूसरी वाजिब चीज़, तो ऐसी स्थिति में सलाम से पहले दो सजदए सहव करेगा,

सन्देह की स्थिति में, यदि इंसान को रकअतों की संख्या के बारे में सन्देह हो, जैसे उसे सन्देह हो जाए कि उसने दो रकअतें पढ़ी हैं या तीन रकअतें पढ़ी हैं तो इस स्थिति में कम वाली संख्या को बुनियाद बनायेगा। क्यों कि उसकी नज़र में वह संख्या यकीनी है। और सलाम से पहले सजदए सहव करेगा,

यदि रुकन के छूट जाने के सिलसिले में शक हो जाए तो उसे यह मान कर अदा करेगा मानो उसने उस रुकन को छोड़ दिया है। अतएव वह उस अमल को और उसके बाद के आमाल को अंजाम देगा और सजदए—सहव करेगा।

यदि उसे शक होने लगे कि पता नहीं मैंने यह पढ़ा है कि नहीं, या यह किया है कि नहीं तो जिस तरफ उसका अधिक गुमान हो उसी के अनुसार अमल करेगा और सजदए सहव अंजाम देगा।

सुनन रवातिब

हर मुसलमान, मर्द और औरत के लिए मुक़ीम की हालत में बारह रकअतों का एहतमाम मुस्तहब है।

चार रकअत नमाज़े जुहर से पहले, और दो रकअत नमाज़े जुहर के बाद, दो रकअत मगरिब के बाद, दो रकअत इशा के बाद और दो रकअत फ़ज़्र के पहले,

उम्मुल मोमेनीन उम्मे हबीबा रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुए सुना:

مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّيَ لِلَّهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً نَطْوَعًا، غَيْرَ فَرِيضَةٍ، إِلَّا بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ، أَوْ إِلَّا بَنَى لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ

“जो मुसलमान बन्दा अल्लाह के लिए हर दिन फर्ज के अलावा बारह रकअतें नफ़ल पढ़ता है तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में एक घर का निर्माण करता है या उसके लिए जन्नत में एक घर बनाया जाता है, (सही मुस्लिम 728)

सभी रवातिब सुन्नतों और नफ़ल नमाज़ों के ताल्लुक से अच्छा यही है कि उन्हें अपने घर में अदा किया जाए। जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

إِذَا قَضَى أَحَدُكُمْ الصَّلَاةَ فِي مَسْجِدِهِ، فَلْيَجْعَلْ لِنَيْتِهِ نَصِيبًا مِنْ صَلَاتِهِ، فَإِنَّ اللَّهَ جَاعِلٌ فِي بَيْتِهِ مِنْ صَلَاتِهِ خَيْرًا

“जब तुम में से कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ों में से अपने घर का हिस्सा भी बनाये। क्योंकि अल्लाह तआला उसके अपने घर में नमाज़ अदा करने को खैर व बरकत का कारण बनाएगा, (सही मुस्लिम 778)

ज़ैद बिन साबित रजियल्लाहु अन्हु से मुत्तफ़क़ अलैह हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: فَإِنَّ خَيْرَ صَلَاةٍ الْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ إِلَّا الصَّلَاةَ الْمَكْتُوبَةَ

“फ़र्ज नमाज़ के सिवा, इंसान की बेहतर नमाज़ घर की है, (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 6113, मुस्लिम 781)

नमाज़े वित्र

मुसलमानों के लिए वित्र की नमाज़ अदा करना मसनून है। यह सुन्नते मुअक्किदा है और इसका वक़्त इशा की नमाज़ के बाद से तुलूए फ़ज़्र तक है और जो जाग सकता हो, उसके लिए बेहतर वक़्त, रात का आख़िरी हिस्सा है।

यह उन सुन्नतों में से है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी नहीं छोड़ा बल्कि हमेशा सफ़र में हो या हज़र में, उसे अदा करते रहे,

वित्र की सबसे कम संख्या एक रकअत है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में ग्यारह रकअतें पढ़ा करते थे जैसा कि उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है कि

أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ يُصَلِّي بِاللَّيْلِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً،
يُوتِرُ مِنْهَا بِوَاحِدَةٍ

अल्लाह के रसूल ;सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में ग्यारह रकअतें अदा करते थे। उनमें एक रकअत वित्र की होती थी (सही मुस्लिम 736)

रात की नमाज़ें दो दो रकअतें करके पढ़ी जाती हैं। अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम से रात की नमाज़ के बारे में पूछा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنِي مَثْنِي، فَإِذَا خَشِيَ أَحَدُكُمْ الصُّبْحَ، صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَةً تَوَاتُرًا لَهُ مَا قَدْ صَلَّى

“रात की नमाज़ दो-दो रकअतों में पढ़ी जाती है। जब तुम में से कोई सुबह होने से डरे तो एक रकअत पढ़ ले, जो कुछ पढ़ा होगा, उनके लिए यह वित्र हो जायेगी, (सही मुस्लिम 749)

वित्र में कभी रुकूअ के बाद दुआए-कुनूत पढ़ना मुस्तहब है, क्योंकि हसन बिन अली रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें कुछ कलिमे सिखाए और कहा कि उन्हें वित्र में पढ़ा करो, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है। क्योंकि अकसर सहाबियों ने जिन्होंने वित्र के बारे में उल्लेख किया है, उन्होंने आपके कुनूत का उल्लेख नहीं किया है।

उसी तरह जिसकी रात की नमाज़ें छूट गयी हों, उसके लिए मुस्तहब है कि वह दिन में उनका कज़ा करे। वह दो रकअत, चार, छे, आठ, दस या बारह रकअतें करके पढ़ ले क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा किया है।

फ़ज़्र की दो रकअतें

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन सुन्नतों को सफ़र या हज़र, किसी हालत में नहीं छोड़ा करते थे, उनमें फ़ज़्र की दो रकअत सुन्नत भी शामिल है।

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है:

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ عَلَى شَيْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ أَشَدَّ مُعَاهَدَةً مِنْهُ
عَلَى رَكَعَتَيْنِ قَبْلَ الصُّبْحِ

यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नफ़ल नमाज़ों में सुबह से पहले दो रकअत सुन्नत से ज़्यादा किसी दूसरी नफ़ल नमाज़ पर ज़ोर नहीं देते थे। (मुत्तफ़क़ अलैह, बुख़ारी 1163, मुस्लिम 724)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हीं दो रकअतों के बारे में फ़रमाया है: "मेरी नज़र में वे दोनों, तमाम दुनिया से ज़्यादा महबूब हैं, (सही मुस्लिम 725)

मसनून यह है कि इंसान पहली रकअत में सूरह काफ़िरून और दूसरी रकअत में सूरह इख़लास की तिलावत करे। और कभी पहली रकअत में "कूलू आमन्ना बिल्लाहि वमा उनज़िल इलैना और दूसरी रकअत में "कूल या अहलल किताबि तअ़लौ इला कलिमतिन सवाइम बैनना व बैनकुम, की तिलावत करे।

इसी तरह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल की वजह से इन दोनों रकअतों को हलकी पढ़ना मसनून है। जो इंसान इन दोनों रकअत को फ़ज़्र से पहले न पढ़ सका हो, उसके हक़ में मसनून है कि वह फ़ज़्र की नमाज़ के बाद कज़ा कर ले। अलबत्ता सूरज उगने के बाद और सूरज के एक नेज़ा ऊपर उठने के बाद ज़वाले

आफ़ताब तक इन दोनों रकअतों का क़ज़ा करना ज़्यादा बेहतर हैं।

चाशत की नमाज़

चाशत की नमाज़ को सलाते अक्वाबीन भी कहते हैं। यह सुन्नते मुवक्किदा है और उसके लिए बेशुमार हदीसें आयी हैं। अबूज़र रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يُضْبِحُ عَلَى كُلِّ سَلَامٍ مِنْ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ، فَكُلُّ تَسْبِيحَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَحْمِيدَةٍ صَدَقَةٌ،
وَكُلُّ تَهْلِيلَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَكْبِيرَةٍ صَدَقَةٌ، وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ صَدَقَةٌ، وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ
صَدَقَةٌ، وَيُجْزَى مِنْ ذَلِكَ رَكَعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا مِنَ الضُّحَى

‘‘तुम में से हर व्यक्ति के जिम्मे, उसके शरीर के तमाम जोड़ों की तरफ़ से सदका वाजिब है। अतएव **सुब्हानल्लाह** कहना सदका है। **अल्हम्दुलिल्लाह** कहना सदका है। **लाइलाह इल्लल्लाह** कहना सदका है। **अल्लाहु अकबर** कहना सदका है। भलाई का हुक्म देना सदका है। बुराई से रोकना सदका है। और चाशत के वक़्त की दो रकअतें इन सब की अदायगी के लिए काफ़ी हैं, (सही मुस्लिम 720)

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

أَوْصَانِي خَلِيلِي بِثَلَاثٍ لَا أَدْعُهُنَّ حَتَّى أَمُوتَ: «صَوْمِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ،
وَصَلَاةِ الضُّحَى، وَتَوَمُّمٍ عَلَى وَثَرٍ

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन बातों की नसीहत फ़रमायी है और मुझे ताकीद की है कि मैं

उन्हें मरते दम तक न छोड़ूं पहली बात यह है कि मैं हर महीने के तीन दिनों का रोज़ा रखूं। दूसरी बात यह है कि मैं चाश्त की नमाज़ का एहतिमाम करूं और तीसरी बात यह है कि मैं वित्र पढ़ने से पहले न सोऊं (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 1178, मुस्लिम 721)

चाश्त की नमाज़ का अफ़ज़लतरीन वक़्त यह है जब दिन बुलन्द हो, और धूप तेज़ हो जाए, और ज़वाले आफ़ताब के साथ उसका वक़्त ख़त्म हो जाता है। यह कम से कम दो रकअतें मसनून हैं और ज़्यादा की कोई सीमा नहीं है।

जिन औकात में नमाज़ पढ़ना मना है

कुछ वक़्त ऐसे हैं जिन में नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है,

1. फ़ज़्र की नमाज़ के बाद सूरज उगने और उसके एक नेज़ा ऊंचा होने तक।
2. दोपहर के समय जब सूरज सर पर आ जाता है और उसका पता इससे चलता है कि साया रुक जाता है। यहां तक कि सूरज पश्चिम की ओर झुक जाए।
3. अस्त्र की नमाज़ के बाद से सूरज डूबने तक।

अलबत्ता इन औकात में कुछ नमाज़ें अदा की जा सकती हैं। जैसे तहैयतुल मस्जिद, नमाज़े जनाज़ा, नमाज़े ग्रहन, तवाफ़ की दो रकअतें, और वुजू के बाद की दो रकअतें आदि।

इसी तरह इन औकात में छूटी हुई फ़र्ज़ नमाज़ों को भी पढ़ा जा सकता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

مَنْ نَسِيَ صَلَاةً، أَوْ نَامَ عَنْهَا، فَكَفَّرَ بِهَا أَنْ يُصَلِّيَهَا إِذَا ذَكَرَهَا

जो किसी नमाज़ को भूल गया हो, या उसे नींद आ गयी हो, जब उसे याद आए, तभी उसे पढ़ लेगा, (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 597, मुस्लिम 684)

इसी तरह फ़ज़्र की सुन्नत के क़ज़ा का मसला है। इसी तरह जुहर की सुन्नत को जो वक़्त पर न पढ़ सका हो, उसके लिए उसे अस्त्र के बाद क़ज़ा करना जायज़ है

विषय सूचि

नापाकी का बयान	3
नजासत की किस्में	4
नजासत के तअल्लुक से कुछ अहकामात	5
शौच की आवश्यकता	6
वुजू का बयान, वुजू का तरीका	7, 8
मोज़े पर मसह	9
वुजू को तोड़ने वाली चीज़ें, स्नान या नहाना	11,11
नापाक होने के बाद कौन कौन सी चीज़ें हराम हैं	12
तयम्मूम, तयम्मूम का तरीका	12, 13
माहवारी और नफ़ास	14
नमाज़ के अहकाम	15
नमाज़ से संबंधित अहम अहकाम	18
नमाज़ का समय	21
ऐसी जगहें जहां नमाज़ सही नहीं होतीं	21

नमाज़ की कैफ़ियत	22
नमाज़ के बाद की दुआएं	28
नमाज़ को बातिल कर देने वाली चीज़ें	30
जो बातें नमाज़ में वाजिब हैं	30
नमाज़ के अरकान	31
सहव का बयान	32
सुनन रवातिब	33
नमाज़े वित्र	34
फ़ज़ की दो रकअतें	36
चाशत की नमाज़	38
जिन औक़ात में नमाज़ पढ़ना मना है	39